आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : नौंवा अंक : नौंवा जनवरी-2012

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in, Website : www.ajaibbani.org

4

चरन कमल तेरे

(एक शब्द)

5

नए साल की शुभकामनाएं

9

दु:खों का देश

(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(बैंगलोर)

29

सवाल-जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

संपादक -
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान)
मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक -
नन्दनी

विशेष सलाहकार -
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 099 28 92 53 04

सम्पादकीय सहयोगी -
रेनू सचदेवा ज्योति सरदाना सुमन आनन्द

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2012 – 118 – **मूल्य – पाँच रुपये**

चरन कमल तेरे धोऐ-धोऐ पीवां
(एक शब्द)

चरन कमल तेरे धोऐ–धोऐ पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला, (2)

1. पारब्रह्म परमेश्वर सतगुरु, आपै करने हारा, (2)
चरन धूड़ तेरी सेवक मांगै, तेरे दर्शन को बलिहारा, (2)
चरन कमल .....

2. मेरे राम राय ज्यों, राखै त्यों रहियै, (2)
तुध भावै तां नाम जपावै, सुख तेरा दित्ता लईयै, (2)
चरन कमल .....

3. मुक्त भुगत जुगत तेरी सेवा, जित तूं आप कराई, (2)
तहां बैकुंठ जहां कीर्तन तेरा, तू आपै श्रद्धा लाई, (2)
चरन कमल .....

4. सिमर सिमर सिमर नाम जीवां, तन–मन होऐ निहाला, (2)
चरन कमल तेरे धोऐ–धोऐ पीवां, मेरे सतगुरु दीन दयाला, (2)
चरन कमल .....

5. कुरबान जाई उस वेला सुहावा, जित तुमरे दवारे आई, (2)
'नानक' को प्रभ भऐ कृपाला, सतगुरु पूरा पाया, (2)
चरन कमल .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

नए साल की शुभकामनाएं

हुजूर सावन और कृपाल के प्यारे बच्चों!

आप सबको मेरे गुरु की सच्ची-सुच्ची याद में नए साल के शुभ अवसर पर बहुत-बहुत बधाई। मैं आशा करता हूँ कि नया साल आप सबके लिए खुशियों से भरा हुआ हो और आप सदा तरक्की की राह पर चलें।

प्यारेयो! सभी ऋषियों-मुनियों सन्त-महात्माओं ने अपने समय में, अपनी भाषा में हमें अगाह किया है कि पता नहीं कब मौत का देवता आ जाए और हमें ले जाए! मौत का देवता औरत-मर्द, छोटा-बड़ा, गरीब-अमीर या पूर्व-पश्चिम के रहने वाले किसी का भी लिहाज नहीं करता। यह किसी से डरता नहीं किसी के साथ कोई रियायत नहीं करता, एक बार आ जाए तो टल नहीं सकता।

मौत का देवता समय का पाबंद है, सही समय पर आकर हमें अपनी शक्ल दिखाता है। चाहे हम रोऐं गिड़गिड़ाए यह हमें अपने साथ ले जाता है। गुरुबानी में आता है, ''यहाँ न कोई राजा रहा न कोई महाराजा रहा, न कोई अमीर न कोई फकीर, हर कोई अपनी बारी से चला जाता है कोई किसी को रोक नहीं सकता।''

परमपिता महाराज कृपाल सिंह जी मौत के बारे में बताते हुए कहा करते थे, ''किसी को अपनी मौत के बारे में पता नहीं कि यह किस पल आ जाएगी फिर भी हम सौ सालों के लिए सामान इकट्ठा कर रहे हैं। हम जीव मौत को भूल गए हैं जबकि हम यह नहीं जानते कि अगला श्वास आएगा या नहीं।''

सच्चे परमात्मा सावन कहा करते थे, ''यह बड़ी अचरज बात है कि हम अपने दोस्तों रिश्तेदारों को श्मशान घाट ले जाते हैं, उन्हें आग के हवाले कर देते हैं लेकिन हमारा भूला हुआ मन यह नहीं समझता कि ऐसा एक दिन हम पर भी आना है हमने अचानक इस दुनियां के बाजार को छोड़ जाना है।''

गुरुबानी में आता है, ''आँखें खोलो और देखो! तुम्हारे दोस्त और भाई कहाँ हैं? एक चला गया है और एक जाएगा। हर कोई अपनी बारी आने पर चला जाता है।''

सूफी सन्त फरीद कहते हैं, ''मौत के समय हड्डियां टूटती है और उनमें दर्द होता है। गरीब आत्मा हड्डियों को तोड़कर निकल जाती है।'' कबीर साहब कहते हैं:

घर की नार बहुत हित जास्यो, सदा रहत संग लागी,
जबहि हंस तजि यह काया, भूत भूत कर भागी।

जब शरीर से प्राण निकल जाते हैं तो कोई भी उस शरीर को अपने पास नहीं रखता उसे घर से बाहर निकाल देते हैं। जिस पत्नी से उसने बहुत प्यार किया होता है जो सदा उसके साथ रहती

थी वह भी भूत-भूत करते हुए दूर भाग जाती है।'' भक्त नामदेव जी कहते हैं:

गहरी करके नींव खुदाई, ऊपर मंडप सजाए,
मार्कण्डेय ते को अधिकाई, जिन तिल धर मूंड मुंडाए,
मेरो मेरो कौरव करदे, दुर्योधन से भाई,
बारह योजन छत्र चढ़ाया, देही गरज न खाई,
सरव सोने की लंका होती, रावण से अधिकाई,
दुर्वासा स्यों करत ठगोरी, यादव एह फल पाई,
कृपा करी जन अपने ऊपर, नामदेव हरि गुण गाई।

दुर्योधन और उसके सौ भाई मेरा-मेरा करते थे। उनका राज्य बहुत लंबे समय तक चला लेकिन जब वे मरे तो गीद्धों ने भी उनके शरीरों को नहीं खाया।

रावण बहुत बुद्धिमान था। उसके राज्य में सोने की लंका थी और उसके दरवाजों पर हाथी खड़े रहते थे लेकिन एक ही पल में यह सब किसी और का हो गया।

सन्त-महात्माओं के शब्द बिल्कुल साफ होते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''प्यारेयो! यह मत सोचें कि मौत किसी भविष्यवाणी के मुताबिक किसी खास तारीख या समय पूछकर आएगी। मौत ने एक को डस लिया है और दूसरे को डस रही है इसी तरह सभी डसे जाएंगे। यह न सोचें कि मौत गरीबों को डसती है, राजा-महाराजाओं को छोड़ देती है इसका कोई भाई-बंधु नहीं इसके लिए सब समान हैं। हर कोई प्यार के झूठे रिश्तो को तोड़कर चला जाता है।''

सभी सन्तों ने इंसानी जामें की महानता बताई है। हम केवल इंसानी जामें में ही परमपिता परमात्मा से मिलाप कर सकते हैं दूसरे जामों में परमात्मा से मिलाप नहीं किया जा सकता। आप सदा परमात्मा को याद रखें। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

लख चौरासी जून सवाई, मानस को प्रभ दी वडयाई,
इस पौड़ी ते जो नर चूके, सो आए जाए दुःख पाएंदा।

प्यारे बच्चों! मैं सदा ही आपको सतसंगों में बताता हूँ लेकिन आज मैं कुछ खास सख्त शब्दों में दोहरा रहा हूँ, ''आप मेरे दिल के जज्बात को समझें और मेरे वचनों की कद्र करें। आप आज से अभ्यास को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और ज्यादा से ज्यादा समय अभ्यास में बिताएं ताकि मुझे कुछ आराम मिल सके। मेरे महान गुरु ने मुझे जो ड्यूटी दी है उसे निभाने में आप मेरी मदद करें। आपको दोनों महान गुरुओं की खुशी और दया प्राप्त हो।''

प्यारेयो! यह समय फिर वापिस नहीं आएगा अगर आप इस समय को खो देंगे तो आप पछताएंगे। आप मेरे दिल की गहराई से निकले हुए शब्दों की कद्र करें। आज से और इसी पल से अपनी पूरी ताकत से भजन-सिमरन की तरफ लगा दें। अगर हमारी कमाई पवित्र होगी हमारा जीवन साफ सुथरा होगा और गुरु में विश्वास होगा तो हम बहुत जल्दी अभ्यास में सफल होंगे। आओ! हम गुरु के दरबार में चलकर गुरु की खुशी प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनाएं।

प्यारेयो! मैं आपको एक बार फिर बड़े उत्साह और खुशी से नये साल की शुभकामनाएं देता हूँ। आप मोह, माया, अज्ञानता की नींद से जागें और सच को समझें। मौत को सच और जीवन को झूठ समझें। आप वह दौलत इकट्ठी करें जो आखिरी समय आपकी मदद करे और दुनियां छोड़ते हुए आपके साथ जाए।

आपके जोड़े झाड़ने वाला

AJaib Singh

अजायब सिंह

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

दुःखों का देश

स्वामी जी महाराज की बानी

बैंगलोर

हम परमात्मा को हजारों नामों से याद करते हैं। जब परमात्मा किसी को अपनी रोशनी देना चाहता है अपने साथ मिलाना चाहता है तो अपनी ताकत किसी इंसान में रख देता है। इतिहास बताता है कि जब से संसार बना है तब से परमात्मा ने किसी न किसी सन्त या सतगुरु के जरिए ही रोशनी दी।

दुनियां में वली, पैगम्बर, अवतार और सन्त-महात्मा भी आए। उन्होंने दुनियां के कारोबार किए उन्हें जो भी जिम्मेवारियां मिली उन्होंने अपनी जिम्मेवारियों को निभाया और दुनियां में रहते हुए 'शब्द-नाम' की कमाई की। जिन जीवों के लिए हुक्म होता है कि इन्हें अपने साथ लाना है इन्हें 'शब्द-नाम' का भेद देना है; वे उन जीवों को 'नाम' का भेद देकर अपने असली रूप में समा जाते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज बताया करते थे, ''जेल के अंदर कैदी बीमार भी होते हैं। जेल में डॉक्टर या सुपरिडेंट भी जाते हैं लेकिन वे कैदियों की तरह जेल में नहीं रहते, कभी भी आ-जा सकते हैं।''

इसी तरह हम जीव भी दुनियां में उन कैदियों की तरह हैं। जब तक मालिक हमें अपने प्यारों के साथ नहीं मिलाता, हम अपनी मर्जी या बुद्धि बल से परमात्मा से नहीं मिल सकते। सन्त इस **दुःखों के देश** में उन कैदियों की तरह नहीं आते, वे आज़ाद होते हैं। वे जब चाहे संसार से जा सकते हैं, पर्दा डाल सकते हैं; उतार भी सकते हैं।

पहले हमारी आत्मा सच्चखंड में उस परमात्मा में अभेद थी। वहाँ से यह महाकाल के पास आई। महाकाल ने इसे काल के सुपुर्द कर दिया। काल ने इस आत्मा के ऊपर स्थूल, सूक्ष्म और कारण

तीनों पर्दे चढ़ा दिए साथ ही इन्द्रियां लगा दी और इन्द्रियों को ख्वाहिशों के वश कर दिया। यहाँ आकर हम अपने असली देश की याद भूल गए हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

सुहट पिंजर प्रेम का बोले बोलनहार,
सच चुगे अमृत पिए उडे ते ऐका बार।

जिस तरह तोता पिंजरे के साथ प्यार करके कई किस्म की बोलियां बोलता है। उसे पिंजरे के साथ प्यार हो जाता है, बेशक हम उसे आजाद कर दें वह फिर भी पिंजरे में आ जाता है। इसी तरह हमारा यह जिस्म पिंजरा है और हमारी आत्मा तोता है। इस पिंजरे के साथ प्यार करके हमारी आत्मा कई किस्म की बोलियां बोलती है। यह आत्मा जिस प्रान्त या समाज में जाकर जन्म लेती है उस प्रान्त या समाज के मुताबिक बोली इख्तियार कर लेती है। अगर यह आत्मा 'अनहद शब्द' या 'सतशब्द' का चोगा चुगे तो इस संसार में एक ही बार आए, फिर इसे काल के देश में आने की जरूरत नहीं।

संसार रोगी नाम दारू मैल लग्गे सच बिना।

यह संसार रोगी है। हम कहते हैं कि हम तंदरूस्त हैं हमें कोई रोग नहीं; यह सिर्फ एक-दूसरे का भुलावा है। जिसे कोई जिस्म का रोग नहीं उसे दुनियां की परेशानियों व मौत का डर लगा हुआ है। अगर शादी नहीं होती तो दिन-रात तड़पते फिरते हैं अगर शादी के बाद मियां-बीवी में बेइत्तिफाकी हो जाती है तो वह घर नर्क बनकर रह जाता है। घर में औलाद पैदा नहीं हुई तो भी हम तड़पते फिरते हैं अगर बच्चे कहेकार न हों या उनकी जवानी में मौत हो जाए तो सारी शान्ति भंग हो जाती है।

इसलिए सब महात्माओं ने इस संसार को **दु:खों का देश** कहकर बयान किया है। इन रोगों की दवाई सिर्फ 'नाम' है। जिस तरह मलेरिया बुखार होने पर सबको कुनैन की गोली दी जाती है।

ऐसा नहीं कि उस दवाई की शीशी पर ऐसा लेबल लगा होता है कि यह दवाई हिन्दुओं को फायदा करेगी और ईसाईयो को फायदा नहीं करेगी। कर्नाटक वाले लोगों को फायदा करेगी और पंजाब या राजस्थान के लोगों को फायदा नहीं करेगी। जिसे भी मलेरिया बुखार हो उसे यह दवाई बिना लिहाज फायदा करेगी।

इसी तरह सन्त-महात्माओं का 'शब्द-नाम' अंदर का भेद किसी कौम या मजहब की पर्सनल जायदाद नहीं। हर मजहब और हर मुल्क का आदमी इस 'शब्द-नाम' का हकदार है। भाग्यशाली जीव इस नाम से जुड़कर मुक्ति प्राप्त कर सकता है। यह नाम किसी भाषा में नहीं लिखा जा सकता। यह नाम बिना लिखा कानून और बिना बोली भाषा है। महात्मा हमें नाम के साथ जोड़ने के लिए ही इस **दु:खों के देश** में आते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

खत्री ब्राह्मण वैश्य शूद्र उपदेश चौह वर्णां दा सांझा,
गुरुमुख नाम जपे उदरे कल में नानक घट घट मांझा।

खत्री, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों में कुल दुनियां कुल आलम आ जाता है। सन्त-महात्माओं का उपदेश सब वर्णों के लिए सांझा है। गुरुमुख साधुजन हमारे अंदर 'नाम' टिकाते हैं जो उस नाम की कमाई करते हैं उनका उद्धार हो जाता है। यहाँ किसी कौम, मजहब, मुल्क, पढ़े-लिखे या अनपढ़ का सवाल नहीं। गुरु साहब प्यार से कहते हैं:

जो प्राणी गोविंद ध्यावे, पढ़या अनपढ़या परमगति पावे।

जो नाम की कमाई करता है वही मुक्ति प्राप्त कर सकता है। जिस तरह पढ़ा-लिखा और अनपढ़ आदमी एक जैसी शक्ल रखता है लेकिन उनकी लियाकत में फर्क होता है। इसी तरह सन्त-महात्माओं और हमारे अंदर फर्क होता है वह मालिक के साथ जुड़े होते हैं हम अभी उसके साथ जुड़े नहीं।

सब सन्तों ने परमात्मा को स्वामी स्वामी कहकर पुकारा है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

ऊच अपार बेअंत स्वामी कौन जाणे गुण तेरे,
गावत उदरे सुणते भी उदरे बिनसे पाप घनेरे,
पशु प्रेत मुग्ध को तारे पाहन पार उतारे,
नानक दास तेरी शरणाई सदा सदा बलिहारे।

इंसान का तो 'नाम' से उद्धार होना ही है अगर पशु, पक्षी भी नाम वाले की शरण में आ जाते हैं तो उनका भी उद्धार हो जाता है।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी के वक्त का एक वाक्या है। अमृतसर में आपके आश्रम में एक आम का पेड़ था। जब आप अपनी कोठी बनवा रहे थे तो आपकी दृष्टि उस पेड़ पर पड़ी। आपने सेवादारों से कहा कि इस पेड़ को काट दो। सेवादारों ने कहा कि इस पेड़ के आम बहुत मीठे हैं संगत को इससे छाया मिलती है क्यों न इसे ऐसे ही लगा रहने दें। सन्तो के राज़ को सन्त ही जानते हैं। आपने सेवादारों से कहा अगर यह पेड़ इस योनि से इंसान की योनि में आ जाए तो क्या तुम खुश नहीं होगे, क्या यह फिर ज्यादा बेहतर सेवा नहीं कर सकेगा?

जालंधर का रहने वाला ईश्वर दास आपका सेवक था, उसका कोई बच्चा नहीं था। उसने महाराज जी से विनती की अगर आप इस पेड़ को इंसानी जामा दे रहे हैं तो आप इसे मेरे घर में जन्म दे देवें मैं आपका धन्यवादी होऊंगा, बेशक यह दुनियावी चीज है मुझे माँगनी नहीं चाहिए फिर भी आप दया करना चाहते हैं तो आप मुझ पर यह दया करें। ईश्वर दास के घर में बच्चा पैदा हुआ कुछ समय बाद जब वह बच्चे को लेकर महाराज जी के पास आया तो आपने उन सेवकों से कहा क्या तुम इस बच्चे को देखकर खुश नहीं! महाराज जी ने उस बच्चे का नाम आम ही रखा।

सन्त-महात्मा संसार में आकर किसी के साथ पक्षपात नहीं करते बल्कि वे मुफ्त के मजदूर होते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो महात्मा हमारे ऊपर कोई बोझ न डाले अपने जातिय खर्च के लिए हमसे एक पैसे की भी आशा न रखे और अपने दस नाखूनों की मेहनत से कमाकर लंगर में डाले, इससे सस्ता नौकर हमें कहाँ मिलेगा?''

महात्मा हमेशा ही संसार में आते हैं। कभी गुरु नानक बनकर आए, दस गद्दियां चलाईं। जिन प्रेमियों ने उनसे 'नाम' प्राप्त किया उनकी मुक्ति हो गई। इसी तरह हमारे सतगुरु महाराज इस संसार में आए जिन्होंने उनसे नाम लिया उनकी मुक्ति हो गई। जिन कौमों के दिल में ख्याल होता है कि सन्त संसार में आते ही नहीं अब उनका रास्ता बंद हो गया है उनकी बुद्धि में काल ने भ्रम डाल दिया है। कुदरत का कानून कभी बंद नहीं होता लेकिन उन कौमों के अंदर परमात्मा से मिलने का शौंक, विरह और तड़प नहीं है कबीर साहब कहते हैं:

अग्नि लगी आकाश को झड़ झड़ पैंण अंगियार,
सन्त न होते जगत में ते जल मरता संसार।

बाँस के जंगल में अपने आप ही अग्नि पैदा हो जाती है। मैं जब हवाई जहाज में आस्ट्रेलिया का सफर कर रहा था तो देखा जंगल में अपने आप ही आग लगी हुई थी। वहाँ की सरकार दुविधा में थी, वहाँ के लोगों को बचा रही थी। जिस तरह जंगल में अपने आप आग लगी हुई थी उसी तरह इंसानों में भी क्रोध की आग निकल रही है। हम एक-दूसरे का सिर गाजर मूली की तरह कत्ल कर रहे हैं। भाई-भाई, कौम-कौम का आपस में प्यार नहीं।

सन्त-महात्मा संसार में यही संदेश लेकर आते हैं कि हम पहले भी एक थे; परमात्मा के देश में हम आत्मा करके सब एक हैं।

हम सबका परमात्मा एक है ऐसे ही आपको गलतफहमी है। हम सब भाई हैं आओ हम इकट्ठे होकर बैठें।

होए एकत्र मिलो मेरे भाई दुविधा दूर करो लिव लाई,
हर नामे की होवो जोड़ी गुरुमुख बैठो सफा बिछाई।

आप अपने अंदर जाकर देखें आपकी दुविधा दूर होगी। आप सब लोग 'नाम' के साथ जुड़कर देखें। परमात्मा हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई नहीं, परमात्मा सबका है। परमात्मा ने कोई जाति या कौम नहीं बनाई और न ही उसका किसी जाति या कौम के साथ भेदभाव है। वह पशु, पक्षी के अंदर भी बैठा है। हमारी समझ में नुख्स हो सकता है, हम भूल सकते हैं; गलती कर सकते हैं लेकिन 'शब्द रूप' परमात्मा सन्तों के अंदर प्रकट होता है वह कभी गलती नहीं करता। वह हमारे अंदर बैठकर सब कुछ देख रहा है जिसकी जैसी चाकरी है वह उसे वैसा ही आराम दे रहा है।

स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द आपके आगे रखा जा रहा है। आप कहते हैं कि जब परमात्मा जीवों को रोशनी देना चाहता है तो अपनी ताकत किसी इंसान में रखता है। वह देखने में जरूर इंसान लगता है लेकिन हम इंसानों से ऊपर होता है।

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में। गुरु होय जीव चिताये।।

आप कहते हैं, ''सन्त-महात्मा इंसान के रूप में आकर जीवों को नाम के साथ जोड़ते हैं। वे यह भी नहीं कहते कि आप हमें गुरु, पीर, वली या पैगम्बर कहें। वे तो कहते हैं कि आप हमें अपना छोटा भाई, बड़ा भाई, बुर्जुग कह लें। आप उन्हें किसी भी नाम से याद करें इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।''

जब तक महात्मा देह में हैं वे कभी यह नहीं कहते कि हम आपके गुरु या पीर हैं बल्कि वे कहते हैं कि हम संगत के दास, जूते

झाड़ने वाले हैं। वे सबके आगे सिर झुकाकर ही खुश होते हैं। वे किसी से पैरों पर हाथ लगवाकर खुश नहीं होते। मौहम्मद साहब के इतिहास में आता है कि आपने सारी जिंदगी किसी को पहले सलाम करने का मौका नहीं दिया। तुलसी साहब भी कहते हैं:

गुरु निवे जो सिक्ख को साध कहावे सोय।

जब पेड़ को फल लगता है तो वह झुक जाता है। जब हमारे अंदर परमात्मा प्रकट हो जाता है, हमें अपने चरणों में जगह दे देता है तो हमारे अंदर भी नम्रता पैदा हो जाती है। इसी तरह महात्मा का प्यार आत्मा के साथ होता है। बुराई मन के अंदर है। आत्मा निर्दोष है। औरत, मर्द, पशु, पक्षी सबके अंदर वही आत्मा है। जब हमें समझ आ जाती है फिर हमें पता लगता है। बुल्लेशाह कहते हैं:

मौला आदमी बन आया।

वह खुदा इंसान के चोले में आया हुआ है। इसी तरह गुरु अर्जुनदेव ने अपने गुरु रामदास को कहा:

हर जिओ नाम पड़यो रामदास।

सच्चाई तो यह है कि अब उस परमात्मा का नाम ही रामदास है। इसी तरह जब इस गरीब आत्मा को समझ आई तो गुरुदेव परमपिता कृपाल को यही कहा कि वह भगवान बंदा बनकर आया है। जिसे भी समझ आया उसने यही कहा कि भगवान बंदे के रूप में आया है। वह 'नाम-शब्द' का मिशन लेकर आता है और 'नाम-शब्द' का भेद देता है। वह न तो कोई नई कौम बनाने के लिए आता है और न पहले की बनी हुई कौम तोड़ने के लिए आता है।

सतगुरु महाराज सावन सिंह जी को किसी ने कहा कि आप भी अपने समाज का कोई नाम रखें। आपने कहा, ''पहले ही बहुत कुएं खुदे हुए हैं, नया कुआँ खोदने की क्या जरूरत है? पहले ही बहुत समाज बने हुए हैं नया समाज बनाने की क्या जरूरत है?''

जिन जिन माना बचन समझ के। तिनको संग लगाये।।

आप कहते हैं, ''जो भी गुरु की शरण में आए, जिन्होंने सतसंग को समझा, गुरु के कहे मुताबिक अपने जीवन को सुधारा, विवेक बुद्धि से अच्छे और बुरे की परख की; उन्हें वे अपने साथ ही ले गए। गुरु मिल गया, नाम मिल गया अगर फिर भी हमने संसार में ठोकरें खानी हैं तो गुरु के मिलने का क्या फायदा?''

सन्त नहीं चाहते कि हमारे सेवक इस संसार में ठोकरें खाते फिरें। सन्त चाहते हैं कि सेवक गुरु के जीवनकाल में ही अपना काम बनाएं। जिस तरह कोई टीचर यह नहीं चाहता कि मेरे शार्गिद फेल हो जाएं या काबिल न हों। इसी तरह सन्त-सतगुरु चाहते हैं कि उनके ज्यादा से ज्यादा सेवक अपने अंदर शब्द की धार प्रकट कर लें तो उन्हें खुशी होती है।

इतिहास पढ़कर हमें शर्म महसूस होती है कि हमने उन मालिक के प्यारों के साथ क्या-क्या सलूक किए? गुरु नानकदेव जी का इतिहास पढ़ने से पता लगता है कि कसूर के इलाके में एक गांव के लोगों ने आपको इसलिए रात नहीं गुजारने दी कि आप ठीक उपदेश नहीं करते। आपने एक कोढ़ी की कुटिया में रात काटी, कोढ़ी का कोढ़ तो दूर हो गया लेकिन वे लोग समझ नहीं सके कि एक चोटी का महात्मा कुलमालिक संसार में आया हमने उसके उपदेश को नहीं समझा, उसे कुराहिया कहा। कबीर साहब कहते हैं:

पारस में और सन्त में बड़ा अंतरो जान,
वह लोहा कंचन कर ले वह कर ले आप समान।

पारस एक पत्थर होता है। बुजुर्गों से सुनते हैं, पारस में यह गुण है कि उसे लोहे से छुआ दें तो लोहा सोना बन जाता है लेकिन वह पारस नहीं बना सकता लेकिन सन्तों में यह गुण है कि सन्त जीव को अपना ही रूप बना लेते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

नानक गुरु ते गुरु भये देखो तिसकी रजाय।

जब गुरु की रज़ा होती है जीव को अपना ही रूप बना लेता है।

कर सतसंग सार रस पाया। पी पी तृप्त अघाये।।

आप प्यार से कहते हैं, ''जिनके ऊँचे भाग्य थे वे सतसंग से फायदा उठा गए। सतसंग में आए सतसंग को समझा, अंदर नाम शब्द के रस को पीकर तृप्त हो गए।''

गुरु संग प्रीत करी उन ऐसी। जस चकोर चन्दाये।।

आप कहते हैं, ''सतसंग सुनकर, अभ्यास व नाम की कमाई करके शिष्यों के अंदर सोया हुआ प्यार जाग जाता है। शिष्यों की गुरु के साथ इस तरह की मौहब्बत होती है जिस तरह चन्द्रमा की चकोर के साथ होती है। पूर्णिमा की रात को चकोर टिकटिकी लगाकर बैठ जाता है आँख भी नहीं झपकता कि कहीं चन्द्रमा छिप न जाए, बेशक गर्दन में तकलीफ होने लग जाती है लेकिन वह परवाह नहीं करता।''

गुरु बिन कल नहिं पड़त घड़ी इक। दम दम मन अकुलाये।।

आप प्यार से कहते हैं, ''जब तक हम अंदर नहीं जाते तब तक सच्चा प्यार उपज ही नहीं सकता। प्रेमियों का यह हाल है कि उन्हें गुरु के बगैर एक मिनट भी साँस लेने की फुर्सत नहीं। जैसे पानी के बिना खेती सूख जाती है इसी तरह अगर गुरु का दर्शन नहीं होता तो उनकी आत्मा मुरझा जाती है। अगर हम संगत में ऐसे प्रेमी ढूंढे तो बहुत थोड़े ही मिलते हैं। अपने अंदर झाँककर देखें! क्या हमारे अंदर इतनी तड़प है, इतना प्यार है?''

जब गुरु दर्शन मिलें भाग से। मगन होत जस बछड़ा गाये।।

प्रेमियों को जब भाग्य से गुरु का दर्शन मिल जाता है तो वे इस तरह मगन हो जाते हैं जिस तरह गाय सारा दिन बाहर चारा चरती है

लेकिन जब अपने बछड़े के पास आती है तो उसे देखकर मगन हो जाती है। गाय अपने प्यारे बछड़े को दूध देती है और मुँह से उसकी मैल भी साफ करती है। एक पशु में भी इतना प्यार है। ऊँचे भाग्य हों तो हमारे अंदर भी गुरु के लिए ऐसी प्रीत उपज जाती है।

मैं बताया करता हूँ कि जब मेरे गुरुदेव मेरे आश्रम में आते उस समय मैं आधा पागल हो जाता था कि यह वक्त गनीमत है। आप जब आते तो कई बार मैं ये तुक बोलता था:

नाल परदेसी न्यों न लाईए चाहे लख टके दा होवे।

आप अभी आए हैं, मैंने जी भरकर दर्शन भी नहीं किए और आप अभी चले जाऐंगे मेरे ऊपर क्या गुजरेगी? आप इस तुक को यह कहकर पूरा करते:

एक गलों परदेसी चंगा जद याद करे ते रोवे।

हमारे इलाके के लोग कहा करते कि अजायब सिंह ने कृपाल को अपने ऊपर मेहरबान कर लिया है। मैं कई बार अपने गुरु का धन्यवाद करता, अपने ऊपर शर्म भी आती थी कि हम जीव तो मैले हैं यह आपकी ही दया है।

जब ऊँचे भाग्य होते हैं तो गुरु के लिए ऐसी प्रीत पैदा हो जाती है अगर हम ऐसी प्रीत बना लें तो सतगुरु के लिए मिशन चलाना क्या मुश्किल है? ऊँचे भाग्य वाले इस तरह मगन हो जाते हैं जिस तरह गाय बछड़े को देखकर खुश हो जाती है।

ऐसी प्रीत लगी जिन गुरुमुख। सो सो गुरु अपनाये।।

जिनकी गुरु के साथ ऐसी प्रीत लग गई है उनका भजन सिमरन सब कुछ हो जाता है। सन्तों को हमारे प्यार की जरूरत नहीं, वे तो अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। दर्पण को जरूरत नहीं कोई उसे देखे या न देखे; यह तो देखने वाले की मर्जी है।

सन्त धुर से बने बनाए आते हैं लेकिन इस संसार में आकर बहुत कठिन तपस्या करते हैं। गुरु नानकदेव जी अच्छे घराने में पैदा हुए थे। आपने ग्यारह साल ईंट-पत्थरों का बिछोना किया, अक्क का आहार किया।

इसी तरह कबीर साहब ने बहुत साल खिचड़ी का आहार किया। राजा-महाराजा आपके सेवक थे क्या आप अच्छे खाने नहीं खा सकते थे? हमारे महाराज सावन सिंह जी ने बाईस साल खोज की। आप कई-कई रातें जागते रहते। आपने एक बैरागन बनाई हुई थी जब नींद तंग करती तो खड़े होकर अभ्यास करते। इसी तरह महाराज कृपाल ने अभ्यास के लिए रावी नदी को चुना, रावी के पानी में खड़े होकर अभ्यास करते थे कि नींद न आ जाए। एक बार रात के समय आप अभ्यास के लिए जा रहे थे; पुलिस वाले ने पूछा कौन है? आपने कहा, ''भजन करने के लिए जा रहा हूँ अगर तेरा दिल मानता है तो तू भी मेरे साथ आ जा।'' पुलिस वाले ने कहा, ''यह आपको ही मुबारक हो।''

महाराज कृपाल आमतौर पर लाहौर के गूंगे पहलवान की मिसाल दिया करते थे कि वह सारी रात मेहनत और कसरत किया करता था इसलिए कामयाब हुआ। कबीर साहब कहते हैं:

हँस हँस पिया न पाया जिन पाया तिन रोय,
हाँसी खेड़े पिया मिले ते कौन दुहागन होय।

कम खाना, कम सोना, रात को जागकर मेहनत करने से ही परमात्मा खुश होकर हमारे लिए दरवाजा खोलता है। ऐसा नहीं कि रात को जागने से ही परमात्मा मिलता है। गुरु साहब कहते हैं:

जागना जागना हरि कीर्तन में जागना।

रात को चोर चोरी करता है। भोगी भोग भोगता है उसके लिए परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता। जो मालिक के रंग में जागता है,

नाम की कमाई करता है उसके लिए परमात्मा दरवाजा खोलता है। जिसकी गुरु के साथ इस तरह की प्रीत लग गई है वह गुरु को प्रकट कर लेता है और गुरु के देश चला जाता है।

महाराज सावन सिंह जी जब अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के गांव घुमाड़ा गए तो उस गाँव के लोगों ने आपसे खुष्क बातें की। सेवादारों ने कहा, ''महाराज जी! ये लोग आपके साथ खुष्क बातें कर रहे हैं आप फिर भी इनके साथ प्यार से पेश आ रहे हैं।'' महाराज जी ने हँसकर कहा कि ये लोग इस गांव में पैदा हुए हैं यहाँ मेरे गुरु ने अपना बचपन बिताया है।

आपने फिर कहा कि मजनूं को लैला से दुनियावी प्यार नहीं था। एक बार मजनूं कुत्ते के पैर चूम रहा था। किसी ने मजनूं से पूछा कि तू कुत्ते के पैर क्यों चूम रहा है? मजनूं ने कहा कि यह कुत्ता कभी-कभी लैला की गली में चक्कर काट आता है। प्यारे का प्यारा भी प्यारा होता है। इस गाँव के लोगों से प्यार करना मेरा फर्ज है। आप देखें! बाबा सावन सिंह जी अपने गुरु के ऊपर कितने आशिक थे, उनसे कितना प्यार करते थे।

तन की लगन भोग इन्द्री के। छिन में सब बिसराये।।

आप प्यार से कहते हैं कि लड़कियाँ गुड्डी-पटोलों के साथ तब तक ही खेलती हैं जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती। जब शादी हो जाती है पति के चरणों से प्यार लग जाता है फिर कौन गुड्डी-पटोलों को संभालकर रखता है। हम विषय-विकारों में तब तक ही लगते हैं जब तक 'शब्द-नाम' को अपने अंदर प्रकट नहीं कर लेते। जब अंदर गुरु प्रकट हो जाता है नाम प्रकट हो जाता है तब इन्द्रियों के भोग अपने आप ही छूट जाते हैं।

अगर हम किसी भिखारी से उसकी भीख छीनने की कोशिश करें, वह मरने मारने के लिए तैयार हो जाएगा कि मैंने सारा दिन

मेहनत करके ये पैसे इकट्ठे किए हैं। अगर हम उस भिखारी के हाथ में दस रूपये का नोट, पौंड या डॉलर वगैरहा दे दें तो अपने आप ही उसकी कौडियों वाली मुट्ठी ढ़ीली हो जाएगी।

इसी तरह सन्त-महात्मा हमें 'शब्द-नाम' का भेद देते हैं। जब हम कमाई करके अंदर 'शब्द-नाम' के साथ जुड़ जाते हैं अपने आप ही हमारा मन विषय-विकारो और दुनियां की बड़ाई से निकल जाता है; हमारा शब्द-नाम के साथ सच्चा प्यार हो जाता है।

गुरु की मूरत बसी हिये में। आठ पहर गुरु संग रहाये।।

आप कहते हैं, ''गुरु का स्वरूप दिल में इस तरह बस गया कि वह आठों पहर संग रहता है।'' जिस तरह मैं महाराज सावन सिंह जी के लिए कहा करता हूँ कि वे प्यार के स्वरूप थे। संसार में अनेकों शक्लें देखी लेकिन उन जैसी कोई शक्ल नहीं दिखी। हम कहेंगे कि गुरु सबके साथ कैसे रह सकता है? गुरु के सेवक तो अमेरिका, यूरोप और कई अलग-अलग मुल्को में हैं।

महात्मा हमें बताते हैं कि जब हम सिमरन के जरिए अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाकर एकाग्र कर लेते हैं सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके गुरु स्वरूप को अंदर प्रकट कर लेते हैं तो वह स्वरूप हमारे साथ इस तरह रहता है जिस तरह इंसान की परछाई साथ-साथ रहती है। इस तरह अगर हम यह कहें कि गुरु का स्वरूप हमसे अलग हो जाए, यह कभी नहीं हो सकता। आप जब सोएंगे वह आपके साथ सोऐगा। उठने पर आपके साथ उठेगा। आपके साथ कारोबार करता हुआ नज़र आएगा। ऐसे बहुत से सतसंगी महाराज सावन के समय में भी मिलते थे।

महाराज सावन सिंह जी का एक सतसंगी केहर सिंह था। उन्हें अंग्रेज सज्जन मिलते तो कहते कि आपके पीछे एक सफेद दाढ़ीवाला बुजुर्ग दिखाई देता है वह कौन है? कुछ समय तो उसने

अपने आपको छिपाया आखिर एक दिन कहा कि यह हमारे सतगुरु हैं, पंजाब में रहते हैं। यहीं से पश्चिम में 'नामदान' का सिलसिला शुरू हुआ।

हम सतगुरु महाराज कृपाल के बारे में भी बहुत कुछ सुनते रहे हैं कि किस तरह आपका स्वरूप दुनियां में गया और आपने लोगों को बुलाया कि मैं इस जगह बैठा हूँ; आओ! मैं आपकी इंतजार में हूँ। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत है? वह स्वरूप हमेशा ही सेवकों के साथ रहता है। बेशक सेवक छोड़ने की कोशिश भी करे लेकिन वह स्वरूप सेवक को नहीं छोड़ता।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने जुल्म की खातिर तलवार उठाई उस समय काफी तादाद में आपकी फौज का नुकसान हुआ और विरोधी फौज ने उन्हें घेर लिया। प्रेमी खाने-पीने के लिए लाचार हो गए। उस समय गुरु साहब को मजबूर किया गया कि लड़ाई में फायदा नहीं, आप बादशाह के साथ सुलह कर लें। गुरु साहब ने कहा कि देखो तो सही मालिक के क्या रंग हैं? जब तूफान आता है बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं। जब कोई सन्त परख करना चाहता है तो बड़े-बड़े प्रेमियों के दिल डोल जाते हैं कि पता नहीं क्या होने वाला है। माझा के प्रेमियों ने सलाह की कि हम गुरु को बेदावा लिखकर दे जाते हैं कि तू हमारा गुरु नहीं हम तेरे सेवक नहीं।

गुरु साहब ने हँसकर कहा कि जो कुछ होना है वह मालिक के हुक्म में होना है। मालिक के हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिलता क्या ये चार प्रेमी हमें बचा लेंगे? आपने कहा प्यारेयो! तुम लिखकर रख जाओ। उन्होंने लिख दिया कि तू हमारा गुरु नहीं हम तेरे सिक्ख नहीं।

जब वे लोग अपने घरों में गए तो उनकी घरवालियों ने पूछा कि गुरु साहब को कहाँ छोड़ आए हो? उन लोगों ने कहा कि गुरु

साहब तो रोज ही लड़ाई छेड़े रखते हैं। हम उन्हें बेदावा लिखकर दे आए हैं कि तू हमारा गुरु नहीं। यह सुनकर घरवालियों को बहुत दुख हुआ क्योंकि पति-पत्नी का एक जैसा कर्म नहीं होता। उन औरतों ने कहा कि तुम हमारे जैसे कपड़े और चूड़ियां पहनकर घर का कारोबार करो, इस समय बड़ी जबरदस्त लड़ाई लगी हुई है हम गुरु साहब के पास जा रहे हैं।

आखिर वे शर्म के मारे मालवा वापिस आ गए और लड़कर शहीद हुए। उनमें जो दो प्रेमी जीवित थे गुरु साहब ने खास मुखिया महा सिंह और माता भागो से पूछा, ''तुम्हें दुनियां का कुछ चाहिए, क्या तुम्हें स्वर्ग ले जाएं?'' सिक्ख गुरु के चरणों के अलावा कुछ भी मांगने के लिए तैयार नहीं होते। उन सिक्खों ने कहा कि आप हमारी टूटी हुई गाँठ को जोड़ दें और उस बेदावा को फाड़ दें। गुरु साहब ने कहा, ''महा सिंह! तू कुछ और मांग ले। मैंने आनन्दपुर में सब कुछ छोड़ दिया लेकिन यह कागज अपने साथ लेकर आया हूँ। इसमें तुमने तो लिखा है कि हम आपके शिष्य नहीं लेकिन मैंने तो यह कहीं नहीं लिखा कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं।''

इसलिए सन्त-महात्मा जिन्हें शब्द-नाम का भेद देते हैं वे जब तक उन्हें उनके घर सच्चखंड न पहुँचा दें; उन्हें छोड़ते नहीं हमेशा उनके साथ रहते हैं। सच्चाई तो यह है कि वे बाँह पकड़कर परमात्मा के आगे खड़ा कर देते हैं कि यह तेरा जीव है भूल गया था भूल बख्शवाने आया है, गुरु से मिलने का यही फायदा है। ऐसा नहीं कि वह हमारे कानों में दो लफ्ज़ बोल दे कि तू तीर्थों पर नहाता रह तेरी मुक्ति हो जाएगी। नाम जिम्मेवारी होती है।

गुरु साहब कहते हैं जो खुद डूबे हैं वे दूसरों को कैसे बचा सकते हैं। पहले अपने मन को शान्त करना है फिर दूसरों को उपदेश देना है लेकिन आज का जमाना ऐसा है:

अवरे को उपदेश दे मुख में पड़ हे रेत,
रास बिरानी राख ते खाया घर का खेत।

ऐसे लोग शन्ति का उपदेश देते हैं जबकि उनका अपना हृदय काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से सड़ रहा होता है। वे लोगों के घर आग बुझाने जा रहे हैं उनके अपने घर में आग लगी हुई है। सबसे पहले हमने अपने आपको शान्ति देनी है, अपनी आग बुझानी है फिर लोगो को उपदेश करना है लेकिन हमारी यह हालत है:

चूहा खड्ड न मावी तिक्कल बद्धा छज्ज।

अपने लिए तो अंदर जाने के लिए जगह नहीं बनाई, अपने आपको पवित्र नहीं किया तो परमात्मा कैसे दरवाजा खोलेगा? लोगों से कहते हैं आओ! हम तुम्हें तार देंगे। महात्मा संसार में आकर सच बताते हैं उनकी बातें सही होती है लेकिन कई बार कष्ट भी आता है। कबीर साहब कहते हैं:

साधु ऐसा चाहिए सच्ची कहे बनाए,
चाहे टूटे चाहे रहे बिन कहे भ्रम न जाए।

अस गुरु भक्ति करी जिन पूरी। ते ते नाम समाये।।

यहाँ औरत-मर्द का सवाल नहीं। जिन्होंने भी गुरु भक्ति की वे सच्चखंड पहुँच गए। उन्होंने अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतार लिए, नाम ने उन्हें अपने में मिला लिया, वे शब्द में जज्ब हो गए।

स्वाँति बूँद जस रटत पपीहा। अस धुन नाम लगाये।।

पपीहा स्वाँति बूँद के लिए ही 'पिरो-पिरो' करता है। वह प्यासा मर जाता है लेकिन दरिया, समुद्र का पानी नहीं पीता, अपनी चोंच नहीं खोलता। वह पक्षी भी सोचता है कि मेरी कुल को दाग लग जाएगा। लेकिन क्या इंसान होकर हमने कभी अपने अंदर झाँककर देखा! परमात्मा ने हमें अपनी भक्ति के लिए, अपने मिलाप के लिए

यह इंसानी चोला दिया है। हम इसे विषय-विकारों, शराबों-कबाबों में गंवा रहे हैं, क्या हम अपने साथ इंसाफ कर रहे हैं?

सन्त-सतगुरु हमें नाम देते हैं सतसंग सुनाते हैं। वे प्यार से कहते हैं कि आप सबसे पहले गुरु भक्ति करें। अब सवाल पैदा होता है कि गुरु भक्ति कहाँ से शुरू होकर कहाँ मुकम्मल होती है? सन्त-सतगुरु कहते हैं कि हमारी देह से ज्यादा हमारे वचनों की कद्र करें फिर अपने फैले हुए ख्यालों को सिमरन के जरिए इकट्ठा करें। सिमरन के जरिए अपने बुरे ख्यालों को साफ करें। जब हम सिमरन करते हैं उस वक्त अपने आप ही हमारे अंदर से बुरे ख्याल निकल जाते हैं। सिमरन झाड़ू का काम करता है जिस तरह मकान के अंदर झाड़ू लगाने से मकान बिल्कुल साफ हो जाता है।

सिमरन के द्वारा जब हम सूरज, चन्द्रमा, सितारे पार करके आँखों के पीछे आ जाते हैं, गुरु स्वरूप तक पहुँच जाते हैं यहाँ पहुंचकर हमारी गुरु भक्ति मुकम्मल हो जाती है। आगे गुरु का काम है, कोई भी सेवक करके देखे! गुरु उससे पहले वहाँ मौजूद होगा। इसके आगे शब्द भक्ति है। जो धुन ऊपर से आ रही है गुरु उस धुन को पकड़वाता है, कि इसे पकड़कर अपने घर चल।

गुरु भक्ति बिन शब्द में पचते सो भी मानुख मूर्ख जान।

आमतौर पर हम सिमरन पर जोर नहीं देते, शब्द पर जोर देते हैं अगर किसी को शब्द सुनाई भी देता है तो वह शब्द ऊपर नहीं खींचता। गुरु से इस तरह का प्यार होना चाहिए जिस तरह पपीहा स्वांति बूँद के लिए पिरो-पिरो करता है। कबीर साहब कहते हैं:

पपीहे का पन देखकर धीरज रही न रंच,
मरते दम जल में पड़ा तोऊ न बोड़ी चुंज।

एक बार मैं गंगा के किनारे घूम रहा था। पपीहे को प्यास लगी वह पिरो-पिरो करते हुए गंगा में गिर गया लेकिन उसने अपनी

चोंच नहीं खोली, दम तोड़ दिया। मेरे दिल पर इस बात का बहुत असर हुआ कि एक पक्षी ने भी अपना धर्म निभाया है। हम इंसान बनकर क्या करते हैं ?

नाम प्रताप सुरत अब जागी। तब घट शब्द सुनाये।।

हम दुनियां की तरफ जाग रहे हैं, परमात्मा की तरफ सो रहे हैं। जब हम गुरु भक्ति मुकम्मल करके आत्मा को शब्द के साथ जोड़ लेते हैं शब्द अपने आप ही हमें ऊपर खींच लेता है। हमने सिमरन के जरिए अपने फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करना है। आत्मा शब्द पर सवार होकर परमात्मा के देश जाती है। हम एक मंडल से दूसरे मंडल को शब्द के जरिए ही पार कर सकते हैं।

शब्द पाय गुरु शब्द समानी। सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये।।

सन्त कभी भी किसी को अपनी देह के साथ नहीं जोड़ते क्योंकि देह न तो सेवक की रहनी है न गुरु की रहनी है। इस देह ने साथ नहीं जाना। यह देह तो बीस-पचास साल के लिए मिली है हमने इसे यहीं छोड़ जाना है। सदा रहने वाला 'शब्द-नाम' है। महात्मा हमें उस शब्द के साथ जोड़ते हैं जो उनके अंदर प्रकट होता है। वह शब्द कण-कण में व्यापक है। जब हम 'शब्द-रूप' गुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं तो हम सूक्ष्म देश सँहस दल कवल में पहुँच जाते हैं। धीरे-धीरे सतगुरु हमें अपने देश सच्चखंड ले जाते हैं।

अलख शब्द और अगम शब्द ले। निज पद राधास्वामी आये।।
पूरा घर पूरी गति पाई। अब कुछ आगे कहा न जाये।।

हमारी आत्मा सच्चखंड की रहने वाली है। शब्द-रूप परमात्मा भी इंसानी जामें में वहीं से आता है। वह अलख अगम लोक है जिसकी गमता को हम पहचान नहीं सकते। वह परमात्मा रूप उस निज पथ में से इंसान बनकर संसार में आता है। हम वहाँ की

महिमा बयान नहीं कर सकते। जो सन्त वहाँ पहुँचा शान्त हो गया। कबीर साहब कहते हैं, ''जिस तरह नमक की पुतली समुद्र की थाह में जाकर पानी हो जाती है फिर आकर किसको हाल सुनाए?''

महाराज सावन सिंह जी एक सुंदर मिसाल देकर समझाते थे कि एक मक्खी पतंगो की सभा में चली जाती है। वह कहती है मेरे भी तुम्हारी तरह पर हैं टाँगे हैं हम सभी भाई-चारा हैं। पतंगों ने सोचा! यह हमारे भाई-चारे में से नहीं है सिर्फ हमें धोखा दे रही है। पतंगो ने कहा कि उस मकान में जाकर देखों कोई दीपक जल रहा है? मक्खी ने फौरन उड़ान भरी और आकर बता दिया कि वहाँ दीपक जल रहा है। उन पतंगों ने मक्खी को मार-मारकर भगा दिया कि अगर हमारा कोई भाई वहाँ जाता तो वह वहीं जलकर अपने आपको खत्म कर देता, वापिस नहीं आता।

इसी तरह आत्मा वहाँ पहुँचकर शान्त हो जाती है, परमात्मा में मिलकर परमात्मा ही हो जाती है। यह आत्मा जिन मंडलों मे से जाती है वहाँ इसे बहुत दया प्राप्त होती है। इसे पता लगता है कि मेरे भाई किस तरह काल की आग में जल रहे हैं, दिन-रात दुखी हो रहे हैं; ये जिसे पूजते हैं वही इन्हें खा रहा है। आत्मा दया लेकर ही उन मंडलो से इस संसार में आती है जिनका अच्छा भाग्य होता है वे **दु:खों के देश** से उनके साथ जाने के लिए तैयार हो जाते हैं बाकी हम सोच-विचार करते हुए इस संसार में ही रह जाते हैं।

स्वामी जी महाराज ने हमें बहुत प्यार से समझाया है कि परमात्मा जीवों को तारने के लिए इंसान बनकर संसार में आता है। प्रेमी का सिमरन के साथ इस तरह का प्यार होना चाहिए जैसे पपीहे का स्वाँति बूँद के साथ प्यार है। हमें सिमरन करके अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहिए।

***

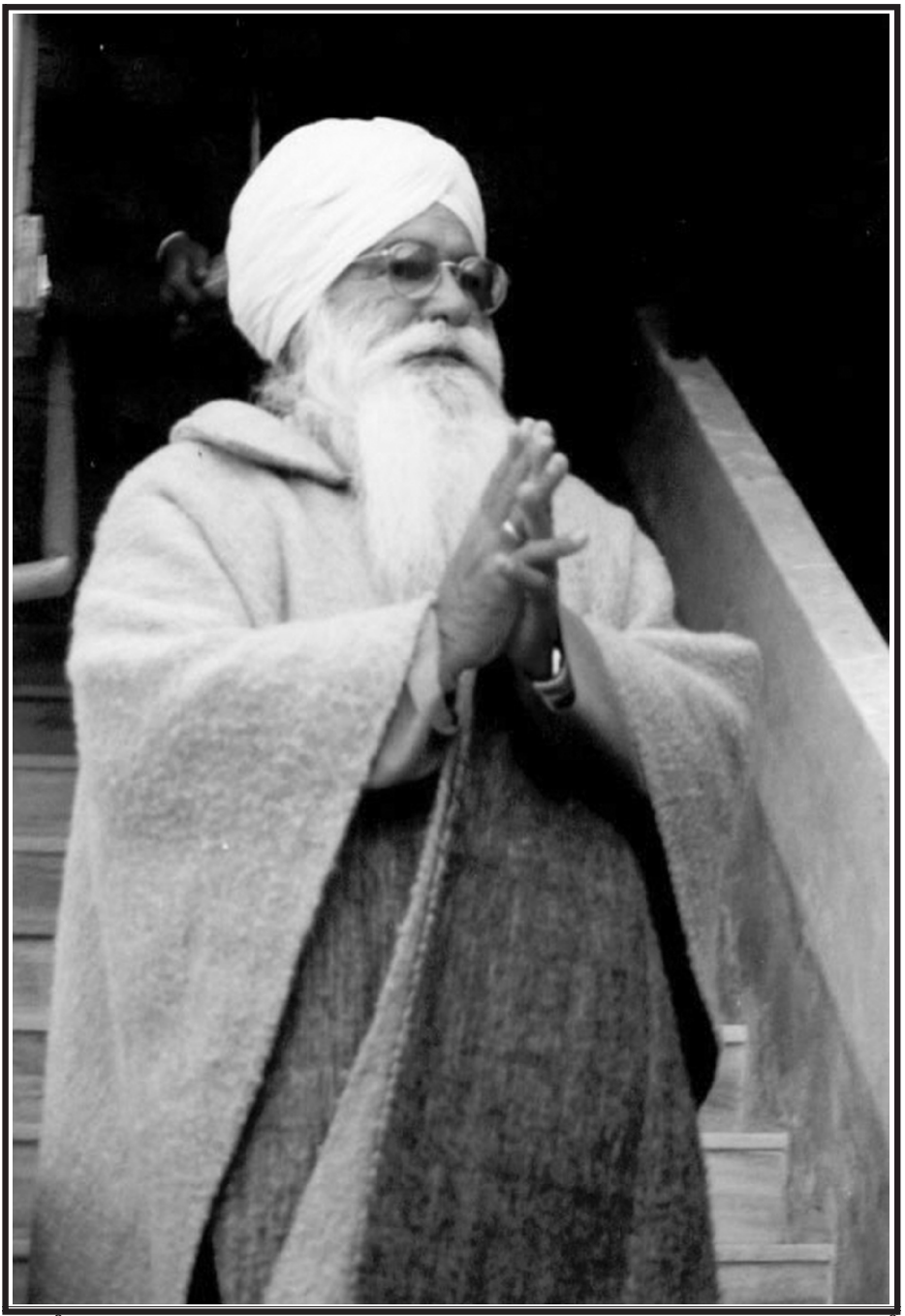

सवाल - जवाब

एक प्रेमी : *प्यारे महाराज जी! बगोटा में हर महीने के आखिर में वीडियो का सतसंग होता है। मैं सितम्बर 1985 में वीडियो सतसंग देख रही थी, मैं टी वी के बहुत नजदीक बैठकर आपके दर्शनों के लिए रो रही थी। उस समय मुझे यह संकेत मिला कि मुझे राजस्थान आने की कोशिश करनी चाहिए। मैं इस बारे में सोच भी नहीं सकती थी क्योंकि मैं बहुत गरीब हो चुकी थी आपको याद होगा कि मेरा दिवाला निकल गया था। मैं महाराज जी की दया से दिसम्बर 1985 में राजस्थान और जनवरी 1986 में मुम्बई भी आ सकी।*

इस साल मार्च महीने के आखिर में जब मैं वीडियो का सतसंग अटेंड कर रही थी तब अचानक ही मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसा कि आपकी तरफ से मुझे टेलीपेथिक मेसिज मिल रहा हो जिसमें मैंने ये शब्द सुने कि आप यह कह रहे थे, ''तुम जुलाई प्रोग्राम में बैंगलोर आओ।'' मैंने बिना सोचे समझे जवाब दिया कि यह बहुत खर्चीली यात्रा है जोकि मेरे लिए बहुत मुश्किल है। उस समय आपकी आवाज ने जवाब दिया कि मैं तुम्हे जो पैसा और काम दे रहा हूँ वह किसलिए है? यह सब एक सैकिंड के अंदर ही हुआ आपने ये सब कुछ स्पैनिश भाषा में बोला। सतसंग के बाद मैंने सोचा कि मैं अपनी तरफ से बैंगलोर जाने की पूरी कोशिश करूंगी। मुझे आने के लिए बहुत रियायती कीमत पर टिकट मिल गई और इस यात्रा में सब कुछ बहुत आराम से हो गया और मैं यहाँ आ गई हूँ।

मैं जानती हूँ कि आपकी मौज के बिना कुछ नहीं होता फिर भी मैं जानना चाहूगी कि आप इस सारे तर्जुबे के बारे में क्या कहना चाहेंगे? दूसरा मैं यह जानना चाहती हूँ कि क्या मुझे ये सारी बात

दूसरे सतसंगियों को बतानी ठीक रहेगी? आपने जो दया मुझ पर की है मैं उसके लिए आपकी बहुत आभारी हूँ।

बाबा जी : जिस व्यक्ति को तजुर्बा होता है वह केवल उसी के लिए होता है अगर कोई संकेत मिलता है तो वह भी केवल उसके लिए ही है। दूसरे लोगों को बताने से आने वाले तजुर्बे और संकेत बंद हो जाते हैं दूसरे लोगों को उससे कोई फायदा नहीं होता। हर व्यक्ति के अपने-अपने ख्याल होते हैं और हर सतसंगी का गुरु के प्रति अपना-अपना आभार होता है। जो बच्चा ज्यादा पढ़ता है टीचर उसकी तरफ ज्यादा तवज्जो देता है इसी तरह कई बार हमारा मन टिक जाता है और गुरु के प्रति आभार प्रकट हो जाता है। गुरु के अंदर जो शब्द काम कर रहा होता है उसने हमें उसी शब्द के साथ जोड़ा होता है। कई बार हम जो सवाल करते हैं उसका जवाब अंदर से ही आ जाता है और वह जवाब सही होता है।

एक बार महाराज सावन सिंह जी सतसंग कर रहे थे। एक लड़की ने खड़े होकर कहा, ''महाराज जी! मेरे अंदर का सब कुछ ही चला गया है क्योंकि मैंने एक सतसंगी को बता दिया था कि मैं अंदर क्या देखती हूँ।'' महाराज जी ने कहा, ''अगर आप किसी बुरी शक्ल वाले को शीशा दिखाएंगे तो वह शीशे को तोड़ देगा। कसूर तो शीशा दिखाने वाले का है। आप आगे से अपना तर्जुबा किसी को मत बताना क्योंकि दूसरे लोग ईर्ष्या करते हैं कि यह इतनी कमाई क्यों करता है ? फिर हमारे नज़ारे बंद हो जाते हैं।''

मेरे पास कई प्रेमी आकर बताते हैं कि जब मैं पहली यात्रा में आया था तो मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ था लेकिन मैंने दूसरे लोगों को जाकर बता दिया। आपके पास हीरे-रतन हैं, अगर आप उनकी नुमाईश लोगों में करेंगे तो हो सकता है किसी को ईर्ष्या हो कि इसके पास इतना धन क्यों है ? या चोर चोरी करके ले जाए तो

हमारे पास सिवाय पछताने के कुछ नहीं रहता। क्या 'नाम' या अनुभव ही ऐसी दौलत है जो हम लोगों को बताते रहें ?

सन्तबानी मैगजीन में पहले टूर का संदेश छपा था जिसमें मैंने यह कहा था किसी सन्त के लिए किसी भी भाषा में बात कर लेना कोई मुश्किल नहीं होता, उन्हें अंदरुनी ज्ञान होता है। सन्त संसार में आकर कुदरत के नियमों के मुताबिक ही सीधा-साधा जीवन व्यतीत करते हैं। वे संसार में आकर दिखावा भी नहीं करते कि वे कुछ हैं। जहाँ आत्मा और शब्द की बात होती है वहाँ किसी ट्रान्सलेटर की जरूरत नहीं पड़ती। कई प्रेमी मेरे पास आकर बताते हैं कि हमारे साथ इंग्लिश या स्पेनिश में बात हुई। यह सब महाराज कृपाल की ही दया है जो प्रेमियों की भाषा में जाकर संदेश देते हैं।

दया की धारा हमेशा ही सन्तों की तरफ से जारी रहती है। कोई ऐसा मिनट सैकिंड नहीं जब उनकी धारा जारी न हो लेकिन हम उनकी दया को कितना प्राप्त करते हैं। पच्चीस साल हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहते रहे, '' देने वाले का कोई कसूर नहीं, सवाल तो लेने वाले का है।''

प्यारेयो ! दया को प्राप्त करने का एकमात्र साधन भजन-सिमरन ही है। हर व्यक्ति का समय तय है कि उसने कब महात्मा के पास जाना है, कब नाम प्राप्त करना है और कब सतसंग में जाना है। जब हमारा मन शान्त होता है गुरु के प्रति दिल में आभार उठता है अगर उस समय हम अभ्यास पर बैठ जाए तो हमारी सुरत को अंदर जाने में मदद मिलती है। हम अंदर से और भी बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं; गुरु से स्पष्ट संकेत ले सकते हैं लेकिन सतसंगी ऐसे मौके का फायदा नहीं उठाते।

***एक प्रेमी** : माँसाहार, शराब और नशे की आदत कैसे छोड़ी जाए? खास करके जब ये आदतें आदमी पर हावी हो जाऐं और वह*

अपने आपको असहाय महसूस करे। सिमरन करने और गुरु की मदद के बावजूद भी अगर वह इन आदतों को न छोड़ सके और असहाय महसूस करे तो उसे क्या करना चाहिए ?

बाबा जी : जो लोग मन के दास होते हैं वे मन के आगे हथियार डाल चुके होते हैं नशा उनका ही पीछा नहीं छोड़ता। ऐसी कोई चीज़ नहीं जो इंसान के पास चलकर आती है, इंसान खुद ही जाकर उन्हें इस्तेमाल करता है। जिन्हें अपनी सेहत और दिमाग से प्यार है वे भूलकर भी नशा नहीं करते।

महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा शराब पीता था। एक दिन उसने महाराज से कहा कि यह मुझसे छूटती नहीं। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''तू इसे नहीं छोड़ता या यह नहीं छूटती? यह तो छूटना चाहती है। क्या यह खुद चलकर तेरे पास आती है ? तू खुद ही जाकर इसे लेकर आता है। जिन लोगों को शराब पीने की आदत है, शराब को याद करते ही उनके मुँह से लार गिरने लगती है वे जल्दी ही इस खव्वाहिश को पूरा करते हैं।''

बाबर बादशाह को भांग खाने की आदत थी। आमतौर पर पिछले जमाने में लोगों का ख्याल हुआ करता था कि साधु सन्त भांग खाकर ही अपनी सुरत को चढ़ाते हैं। जो लोग नशों का इस्तेमाल करते हैं वे लोग ही ऐसी बातें फैलाते हैं कि नशे से मन को बड़ी शान्ति आती है नशा पीकर दुनियां भूल जाती है।

गुरु नानकदेव जी को ऐमनाबाद में कैद किया हुआ था जेल में उनसे चक्की पिसवाई जा रही थी। किसी ने बाबर बादशाह से कहा कि कैदियों में आपने एक ऐसा कामिल फकीर कैद किया हुआ है जिसकी चक्की अपने आप ही चलती है। बाकी के कैदी तो हाथ से चक्की चलाते हैं वह फकीर तो हाथ भी नहीं चलाता आँखें बंद करके बैठा है लेकिन उसकी चक्की सबसे ज्यादा चल रही है।

बाबर ने जाकर गुरु नानकदेव जी से माफी माँगी और सोचा कि मैं इन्हें कीमती चीज़ भांग दूँ शायद इनकी सुरती भांग से लगी है। गुरु नानकदेव जी ने कहा:

पोस्त, अफीम, भंग उतर जाए प्रभात,
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

मुझे 'नाम' की भांग का नशा चढ़ा हुआ है। तेरी भांग का नशा दो-चार घंटे का है इससे शरीर टूटेगा, रात का नशा सुबह तक उतर जाता है फिर खाना पड़ता है। नाम का नशा न दिन को उतरता है, न रात को उतरता है।

जो लोग यह कहते हैं कि सिमरन करने के बावजूद भी हम नशा नहीं छोड़ सकते; माफ करना लफ्ज़ थोड़ा कड़वा है ये सिवाय बकवास करने के अलावा कुछ भी नहीं है। ऐसे आदमी को सिमरन की ताकत का ज्ञान ही नहीं कि सिमरन क्या चीज़ है? अगर हम ईमानदारी से नाम जपें सिमरन में इतना नशा है कि बाकी के नशे अपने आप ही छूट जाएँगे; हम नशे की तरफ देख ही नहीं सकते। यह हम अपने आपको धोखा देते हैं कि सिमरन करने के बावजूद भी हम नशा छोड़ नहीं सकते। प्रेमी ऐसी बातें सुनकर धोखे में आ जाते हैं कि शायद सिमरन में कोई ताकत नहीं।

प्यारेयो! हम सिमरन नहीं करते, नशे छोड़ने की कोशिश नहीं करते। जिन्हें अपनी सेहत और दिमाग से प्यार नहीं वे लोग ही नशा करते हैं। आप लोगों को पूरे गुरु से 'पाँच शब्द' का सिमरन मिला हुआ है। सिमरन के पीछे गुरु का तप, त्याग काम करता है।

मुझे बाबा बिशनदास से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। यह उस समय की घटना है कि एक प्रेमी कई सालों से बड़ी श्रद्धा रखकर रोज मेरे पास आता था। मैं और सुंदरदास रात को आमतौर पर खुले दिल से बातें किया करते थे। एक रात मैं और सुंदरदास परमार्थ की

कुछ बातें कर रहे थे जिससे यह लगता था कि हमने कोई नशा किया हुआ है। उस दिन हमें बिल्कुल पता नहीं लगा कि वह प्रेमी कब आकर हमारे पास आकर बैठ गया और हमें अपनी बातों में मस्त देखकर सोचने लगा कि आज इन्होंने शराब पी हुई है। मालिक की मौज वह एक घंटा बैठा रहा आखिर उसने सोचा कि नशा तो इतनी देर में टूट जाता है इन्हें दोबारा पीना चाहिए था। उसने इधर-उधर नज़र मारी कि शायद कोई बोतल पड़ी होगी। आखिर दूसरे दिन सुबह आकर उसने माफी माँगी कि मैं आपके ऊपर अभाव ले आया था। 'दो-शब्द' के सिमरन में इतना नशा है तो 'पाँच-शब्द' का सिमरन करने वाले को कितना नशा हो सकता है।

मेरे जीवन की घटना है कि एक बार अभ्यास करते हुए सुंदरदास की टाँग जल गई, उसे पता भी नहीं चला। जब अभ्यास से उठे तो सुंदरदास ने कहा, ''आज अभ्यास में जितना रस आया है इतना पहले कभी नहीं आया।'' इसका नाम सिमरन है। सिमरन में जुड़ जाएं तो न अपनी खबर रहे और न अपने जिस्म की। जो लोग यह कहते हैं कि हम सिमरन भी करते हैं और नशे भी पीते हैं उन लोगों के लिए गुरु नानकदेव जी कहते है:

गली हौ सुहागन भैंणे, कन्त न कबहूँ मैं डिट्ठा,
नना नाहि भोग नित भोगे न डिट्ठा न संमलेया,
गली हौ सुहागन भैंणे, कन्त न कबहूँ मैं डिट्ठा।

आदत छोड़ने से ही छूटती है। बुरी आदत छोड़ देनी चाहिए क्योंकि बुरी आदत का बुरा ही नतीजा निकलता है। सतसंगी को अच्छी सेहत की बड़ी जरूरत होती है क्योंकि सेहत अच्छी होगी तो ख्याल भी अच्छे होंगे ज्यादा समय अभ्यास में बैठ सकेंगे और ज्यादा एकाग्रता होगी। सतसंगी को 'नाम' की अहमियत समझनी चाहिए। अंदर जाकर 'नाम' के साथ जुड़ने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश करनी चाहिए। ***